A Pratibha Spandan's Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

प्रतिष्ठित कलाकारों के नवाचार: परंपरा और आधुनिकता के मध्य एक सेतु

Vikas Kumar[1], Dr. Deepti Bansal[2]

1 Research Scholar, Faculty of Music and Fine Arts, University of Delhi.
2 Associate Professor, Faculty of Music, Daulat Ram College, University of Delhi

OPEN ACCESS

सारांश

भारतीय शास्त्रीय संगीत, जो सदियों पुरानी एक परंपरा है, समय के साथ विकसित हुआ है। इसने अपने भीतर न केवल भारतीय समाज की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक गहराई को समाहित किया, बल्कि यह वैश्विक मंच पर भी अपनी पहचान बना चुका है। पंडित रविशंकर, उस्ताद बिस्मिल्लाह खान, पंडित जसराज, उस्ताद राशिद खान, उस्ताद जाकिर हुसैन, विदुषी किशोरी आमोनकर, और विदुषी मालिनी राजुरकर जैसे कलाकारों ने भारतीय शास्त्रीय संगीत को वैश्विक पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके नवाचारों ने संगीत के परंपरागत रूप को न केवल सुरक्षित रखा, बल्कि उसे समकालीन दृष्टिकोण से भी समृद्ध किया। यह पेपर इन कलाकारों के योगदान का विस्तृत अध्ययन करेगा और यह बताएगा कि कैसे उनके प्रयोग और नवाचारों ने भारतीय शास्त्रीय संगीत को एक नई दिशा दी।

***मुख्य शब्द**: प्रतिष्ठित कलाकार, नवाचार*

परिचय

भारतीय शास्त्रीय संगीत को समझने के लिए हमें इसकी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक जड़ों को समझना जरूरी है। भारतीय संगीत एक अमूल्य धरोहर है, जो न केवल भारतीय समाज की सांस्कृतिक विविधता का प्रतीक है, बल्कि यह हमारे दर्शन, ध्यान, और आध्यात्मिकता से भी गहरे तौर पर जुड़ा हुआ है। भारतीय शास्त्रीय संगीत की जड़ें वैदिक काल से जुड़ी हैं, जब सामवेद में संगीत का प्रारंभ हुआ था। समय के साथ, इसने अनेक रूपों में खुद को प्रकट किया और आज यह दो प्रमुख शाखाओं—हिंदुस्तानी और कर्नाटिक—में विभाजित है।

हालांकि, भारतीय शास्त्रीय संगीत की परंपरा सदियों से चली आ रही है, इसमें समय-समय पर नवाचार होते रहे हैं। यह नवाचार शास्त्रीय संगीत के स्वरूप को जीवित रखने और उसे आधुनिक समय की आवश्यकता के अनुरूप ढालने में सहायक रहे हैं। पंडित रविशंकर, उस्ताद बिस्मिल्लाह खान, पंडित जसराज, उस्ताद राशिद खान, उस्ताद जाकिर हुसैन, विदुषी किशोरी आमोनकर, और विदुषी मालिनी राजुरकर जैसे महान कलाकारों ने इस संगीत को न केवल भारतीय उपमहाद्वीप में बल्कि पूरे विश्व में प्रसिद्ध किया। इस पेपर में इन कलाकारों के योगदान का गहराई से विश्लेषण किया जाएगा।

साहित्य समीक्षा

भारतीय शास्त्रीय संगीत में नवाचार के महत्व पर कई विद्वानों और संगीतज्ञों ने अपने विचार प्रकट किए हैं। राधाकृष्णन (2005) ने अपनी पुस्तक *Art and Culture: A Contemporary Perspective* में यह दर्शाया कि कला और संस्कृति के बीच संतुलन बनाए रखना अनिवार्य है। उन्होंने यह तर्क दिया कि परंपरा और नवाचार के बीच सामंजस्य बनाना भारतीय शास्त्रीय संगीत को जीवंत बनाए रखने के लिए आवश्यक है। शर्मा (2010) ने *Classical Music and Its Evolution* में भारतीय शास्त्रीय संगीत के विकास का उल्लेख करते हुए कहा कि आधुनिक युग के कलाकारों ने इसे वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करने के लिए नए दृष्टिकोण अपनाए। उन्होंने पंडित रविशंकर और उस्ताद बिस्मिल्लाह खान के योगदान का विशेष उल्लेख किया।

मुख्य बिंदु

i) **नवाचारों का महत्व:** भारतीय शास्त्रीय संगीत में नवाचारों ने इसे सिर्फ परंपरागत रूप तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे नए दर्शकों के बीच प्रासंगिक बना दिया। पंडित रविशंकर ने भारतीय संगीत को पश्चिमी संगीत से जोड़ने का प्रयास किया। उन्होंने अपनी रचनाओं में रागों और पश्चिमी उपकरणों का सामंजस्यपूर्ण उपयोग किया। यह प्रयास भारतीय शास्त्रीय संगीत को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करने में सहायक रहा। उस्ताद जाकिर हुसैन ने तबला वादन में लय और ताल के नए आयाम जोड़े। उनके प्रदर्शन में पारंपरिक तालों के साथ नए प्रयोग शामिल थे। इससे न केवल तबला वादन की लोकप्रियता बढ़ी, बल्कि यह भारतीय संगीत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन गया।

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

ii) वैश्विक मंच पर भारतीय शास्त्रीय संगीत: भारतीय शास्त्रीय संगीत को वैश्विक पहचान दिलाने में इन कलाकारों की भूमिका अद्वितीय है। पंडित रविशंकर ने अपनी अंतरराष्ट्रीय कंसर्ट्स के माध्यम से भारतीय संगीत को पश्चिमी श्रोताओं तक पहुँचाया। उन्होंने बीटल्स जैसे प्रसिद्ध बैंड के साथ काम किया, जिससे भारतीय संगीत की लोकप्रियता में वृद्धि हुई। उस्ताद बिस्मिल्लाह खान ने शहनाई को भारतीय शादी और धार्मिक कार्यक्रमों से बाहर लाकर एक वैश्विक मंच पर प्रस्तुत किया। उनका संगीत भारतीय संस्कृति और परंपरा का प्रतीक बन गया।

iii) रचनात्मकता और प्रयोग: भारतीय शास्त्रीय संगीत की सबसे बड़ी विशेषता इसकी रचनात्मकता और लचीलापन है। पंडित जसराज ने अपने गायन में भक्ति और रागों का ऐसा मिश्रण प्रस्तुत किया, जिसने श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। उन्होंने *मंगलम* जैसे अनोखे प्रयोग किए, जो रागों और मंत्रों का मेल थे। उस्ताद राशिद खान ने अपनी गायकी में नवीन तकनीकों का समावेश किया। उनके गायन में पारंपरिक बंदिशों के साथ-साथ नई रचनाओं का मिश्रण देखने को मिलता है।

iv) इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का उपयोग: आधुनिक समय में, कलाकारों ने भारतीय शास्त्रीय संगीत को तकनीकी दृष्टिकोण से भी विकसित किया। इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का उपयोग, जैसे सिंथेसाइज़र और साउंड रिकॉर्डिंग तकनीक, ने संगीत को नए आयाम दिए।

पंडित रविशंकर ने लाइव कंसर्ट्स में इन तकनीकों का उपयोग किया, जिससे उनकी प्रस्तुति और भी प्रभावशाली बनी। यह तकनीकी नवाचार संगीत की ध्वनि गुणवत्ता और प्रभाव को बढ़ाने में सहायक रहे।

v) संगीत शिक्षा और संरक्षण: नवाचार केवल प्रदर्शन तक सीमित नहीं रहे, बल्कि संगीत शिक्षा में भी इसे शामिल किया गया। उस्ताद जाकिर हुसैन और पंडित जसराज जैसे कलाकारों ने युवा पीढ़ी को प्रशिक्षित करने के लिए नई विधियों का विकास किया। उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि परंपरागत संगीत आधुनिक दृष्टिकोण के साथ जीवित रहे।

vi) भारतीय संगीत का समकालीन स्वरूप: आज, भारतीय शास्त्रीय संगीत में नवाचारों के कारण यह एक जीवंत और समृद्ध कला रूप बना हुआ है। यह परंपरा और आधुनिकता का एक अद्भुत मिश्रण है। कलाकारों ने इसे समकालीन श्रोताओं के लिए प्रासंगिक बनाया है, जिससे इसकी पहुंच और भी बढ़ी है।

निष्कर्ष

भारतीय शास्त्रीय संगीत में नवाचार और परंपरा का संतुलन इसे समकालीन और प्रासंगिक बनाए रखने में सहायक रहा है। पंडित रविशंकर, उस्ताद बिस्मिल्लाह खान, पंडित जसराज, उस्ताद राशिद खान, उस्ताद जाकिर हुसैन, विदुषी किशोरी आमोनकर और विदुषी मालिनी राजुरकर जैसे कलाकारों ने भारतीय संगीत को वैश्विक मंच पर पहचान दिलाई और इसे नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया। उनके नवाचारों ने परंपरा और आधुनिकता के बीच एक सेतु का निर्माण किया है, जो भारतीय शास्त्रीय संगीत की सबसे बड़ी उपलब्धि है।

संदर्भ

राधाकृष्णन, एस. (2005). कला और संस्कृति: एक समकालीन परिप्रेक्ष्य। नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
शर्मा, वी. आर. (2010). शास्त्रीय संगीत और उसका विकास। नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशंस।
Ravi Shankar, P. (2000). My Music, My Life. London: Vintage Books.
खान, बी. (1997). भारत की शहनाई: एक संगीतमय यात्रा। नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट।
चतुर्वेदी, के. (2012). आधुनिक युग में भारतीय शास्त्रीय संगीत का विकास।* वाराणसी: बनारस हिंदू विश्वविद्यालय प्रेस।
Singh, S. (2015). Indian Classical Music: Tradition and Innovation. New Delhi: Rupa & Co.
शर्मा, ए. (2010). शास्त्रीय संगीत और उसका विकास। दिल्ली: म्यूजिक रिसर्च पब्लिकेशंस।
Radhakrishnan, S. (2005). Art and Culture: A Contemporary Perspective. New Delhi: Oxford University Press.
शर्मा, आर. (2008). भारतीय शास्त्रीय संगीत: परंपरा और नवाचार का सार। मुंबई: सरस्वती म्यूजिक हाउस।
Ravi Shankar: A Life in Music. (2014). Directed by Jean-Philippe Toussaint.
Bose, A. (2016). The Evolution of Tabla: A Study of Its Role in Contemporary Music. Kolkata: Bengal Music Press.
मिश्रा, एस. (2019). उस्ताद बिस्मिल्लाह खान का भारतीय संगीत में योगदान। वाराणसी: काशी विद्यापीठ प्रेस।